International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.in
Volume 1; Issue 9; November 2016; Page No. 64-67

आगरा जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक तकनीकी प्रभाव का अध्ययन

[1] दुर्ग विजय पाल सिंह, [2] डॉ0 जय सिंह

[1] शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।
[2] प्राध्यापक शिक्षा, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
शैक्षिक तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में एक विकासशील, प्रगतिशील तथा महत्वपूर्ण अभियांत्रिकी है, आधुनिक मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, इंजीनियर, प्रशासनिक सिद्धान्त, गणित अन्य सामाजिक एवं भौतिक विज्ञानों द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों एवं नियमों की सहायता से शिक्षण तथा अधिगम के विभिन्न पदों का विश्लेषण तथा सुधार करती हैं एवं उन्हें पुनः प्रतिमानित करके उनका आवश्यकतानुसार नये सिरे से निर्माण करते हुए शैक्षिक कुशलता का विकास करती है। यह कक्षागत शिक्षण में ही नहीं वरन् विद्यालय के सम्पूर्ण वातावरण, शैक्षिक प्रशासन तथा शैक्षिक संदर्भों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शोध क्षेत्र में 89.35 प्रतिशत इस बात से सहमत हैं कि आगरा जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक तकनीकी का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है और 90.24 प्रतिशत अभिमतानुसार माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षण को वैज्ञानिक, वस्तुनिष्ठ, स्पष्ट, सरल एवं रूचिकर बनाने में शैक्षिक तकनीकी का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

मूल शब्दः आगरा जिला, माध्यमिक शिक्षा स्तर, शैक्षिक तकनीकी, प्रभाव, अध्ययन।

1. प्रस्तावना
आज का युग विज्ञान एवं तकनीकी का युग है। आधुनिक समय में तकनीकी का प्रयोग बड़ी तेजी से हो रहा है। इसका प्रयोग सभी क्षेत्रों जैसेः–व्यापार, उद्योग, रक्षा, चिकित्सा, प्रशासन तथा मनोरंजन इत्यादि में बहुतायत से किया जा रहा है। तकनीकी के प्रयोग से कार्य प्रभावी ढंग से होते हैं। आज सूचना क्रान्ति के युग में हैं, जहाँ संचार माध्यम लोगों के बीच जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। अतः अधिगम प्रक्रिया को बेहतर व प्रभावशाली बनाने के उद्देश्य से तकनीकी को शिक्षा में समाहित किया गया है। तकनीकी का प्रभाव आज शिक्षा के सभी क्षेत्रों में दिखाई दे रहा है। शिक्षा में तकनीकी का प्रयोग सर्वप्रथम 1926 में अमेरिका में सिडनी प्रेस्सी ने शिक्षण मशीन के द्वारा किया था। 'शैक्षिक तकनीकी' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम 1950 में यूनाइटेड किंगडम में ब्रायनमोर जोन्स रिपोर्ट में किया गया था।

शैक्षिक तकनीकी वैज्ञानिक आविष्कारों एवं मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में प्रयोग है, जिसके फलस्वरूप शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सके। इसके द्वारा शिक्षा को अधिक रोचक, सरल एवं प्रभावशाली बनाया जा सकता है। शैक्षिक तकनीकी शिक्षा की प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाने का प्रयास करती है। यह न केवल शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाती है अपितु यह शिक्षा के हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतः शैक्षिक तकनीकी ऐसा विज्ञान है, जिसके द्वारा शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्यों की अधिकतम प्राप्ति के लिए नई–नई व्यूह रचनाओं का विकास किया जा सकता है।

शैक्षिक तकनीकी की इसी विशेषता के कारण ही देश तथा प्रदेश के साथ ही आगरा जिले में भी विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर इसका प्रयोग किया जा रहा है। किन्तु वास्तव में शिक्षा में शैक्षिक तकनीकी का प्रयोग जिस ढंग और जिसे स्तर से किया जाना चाहिए उस ढंग और उस स्तर से नहीं किया जा रहा है। इसका प्रमुख कारण यह है कि वर्तमान समय में जो हमारी शिक्षा का ढांचा है उसमें न ही शिक्षक और न ही छात्र–छात्रायें शिक्षा में शैक्षिक तकनीकी को पूर्ण रूप से स्वीकार कर पा रहे है। क्योंकि शिक्षा में शैक्षिक तकनीकी के उपयोग हेतु प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता है और जब तक शिक्षण कार्य हेतु शिक्षकों को ठीक ढंग से प्रशिक्षित नहीं किया जायेगा तब तक शोध क्षेत्र में शिक्षा में शैक्षिक तकनीकी का प्रयोग एक कल्पना ही बना रहेगा। अतः शोध क्षेत्र में शिक्षा में शैक्षिक तकनीकी के माध्यम से शिक्षण कार्य हेतु शिक्षकों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है।

शिक्षण तकनीकी की अवधारणाएँ
शिक्षण तकनीकी निम्नलिखित अवधारणाओं पर आधारित हैः–
1. शिक्षण–प्रक्रिया की प्रकृति वैज्ञानिक है।
2. शिक्षण की क्रियाओं में आवश्यक सुधार किए जा सकते हैं।
3. शिक्षण और अधिगम में पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है।
4. प्रभावशाली अधिगम के लिए शिक्षण द्वारा उचित परिस्थितियाँ उत्पन्न की जा सकती हैं।
5. शिक्षण प्रक्रिया द्वारा पूर्व निर्धारित अधिगम उद्देश्य प्राप्त किए जा सकते हैं।

शिक्षण तकनीकी की विशेषताएँ
1. शिक्षण तकनीकी के शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाया जा सकता है।
2. शिक्षण तकनीकी में छात्र अध्यापक और सेवा कालीन शिक्षक भी लाभ उठा सकते हैं।
3. इस तकनीकी में दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान की सहायता ली जाती है।
4. शिक्षण तकनीकी में लागत, प्रक्रिया और उत्पादन संलिप्त होते हैं।
5. इस तकनीकी से तीनों पक्षों के उद्देश्यों अर्थात् ज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक पक्षों के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है।
6. शिक्षण तकनीकी की सहायता से शिक्षण प्रक्रिया स्मृति स्तर से लेकर चिन्तन स्तर तक संगठित की जा सकती है।

शैक्षिक तकनीकी के कार्य

शैक्षिक तकनीकी के प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं–

1. शैक्षिक उद्देश्यों के सन्दर्भ में व्यावहारिक उद्देश्यों को सीखने की परिस्थितियों में परिवर्तन करना।
2. सीखने वालों की विशेषताओं का विश्लेषण करना।
3. पाठ्यवस्तु को व्यवस्थित करना।
4. पाठ्यवस्तु को प्रस्तुत करने के माध्यमों की संरचना करना।
5. शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की निष्पत्ति का मूल्यांकन करना।
6. विद्यार्थियों के व्यवहार में सुधार लाने के लिए पुनर्बलन तथा पृष्ठपोषण देना।

2. अध्ययन की आवश्यकता

प्रस्तावित शोध की विषय वस्तु माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक तकनीकी प्रभाव के मूल्यांकन एवं उसके उद्देश्य की पूर्ति पर लक्षित है। अतः इस शोध कार्य से शोध क्षेत्र के विशेष संदर्भ में निम्नलिखित महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त होगा।

- माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक तकनीकी का सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।
- माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षण को वैज्ञानिक, वस्तुनिष्ठ, स्पष्ट, सरल एवं रूचिकर बनाने में शैक्षिक तकनीकी का सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

3. शोध की परिकल्पनायें

1. आगरा जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक तकनीकी का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।
2. माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षण को वैज्ञानिक, वस्तुनिष्ठ, स्पष्ट, सरल एवं रूचिकर बनाने में शैक्षिक तकनीकी का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

4. उद्देश्य

- माध्यमिक शिक्षा स्तर पर भौतिक तकनीकी को और अधिक प्रभावी बनाने हेतु सुझाव देना।
- माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षण को वैज्ञानिक, वस्तुनिष्ठ, स्पष्ट, सरल एवं रूचिकर बनाने में शैक्षिक तकनीकी का सकारात्मक प्रभाव का मूल्यांकन करना।

5. शोध समस्या का सीमांकन

5.1 भौगोलिक परिसीमन

शोध अध्ययन का क्षेत्र आगरा जिला है, जिसके अन्तर्गत 15 विकास खण्ड – फतेहपुर सीकरी, अछनेरा, अकोला, बिचपुरी, बरौली–अहीर, खंदौली, एत्मादपुर, खेरागढ़, सैंया, शमशाबाद, फतेहाबाद, पिनाहट, बाह, जैतपुर–कलां एवं जगनेर हैं। भौगोलिक रूप से आगरा जिला कुछ विषमांगी जरूर है, किन्तु आवागमन की दृष्टि से जिले का कोई भी क्षेत्र दुर्गम एवं पहुँच क्षेत्र के बाहर नहीं है। अतः आगरा जिले की राजस्व सीमा के माध्यमिक शिक्षा स्तर के सभी शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों को इस शोध अध्ययन में सम्मिलित किया गया है तथा आगरा जिले की राजस्व सीमा ही शोध क्षेत्र का भौगोलिक परिसीमन है।

5.2 विषयवस्तु का परिसीमन

शोध अध्ययन की विषयवस्तु का परिसीमान शोध क्षेत्र आगरा जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग एवं प्रभाव के समस्त संदर्भों तक किया गया है। जिसमें शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग, विद्यालयों में तकनीकी शिक्षा हेतु संसाधनों की उपलब्धता, शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में तकनीकी शिक्षा हेतु संसाधनों की उपलब्धता में अन्तर शिक्षकों द्वारा शैक्षिक तकनीकी का उपयोग, माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक तकनीकी का प्रभाव, छात्र–छात्राओं द्वारा ग्रहण किये गये ज्ञान को स्थायी रखने में शैक्षिक तकनीकी का प्रभाव, शिक्षण कार्य को वैज्ञानिक वस्तुनिष्ठ, स्पष्ट, सरल एवं रूचिकर बनाने में शैक्षिक तकनीकी का प्रभाव, शैक्षिक तकनीकी द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन तथा शैक्षिक तकनीकी के माध्यम से शिक्षण कार्य हेतु विद्यालयों को शासन द्वारा उपलब्ध कराये जा रहे संसाधनों आदि के अध्ययन तक परिसीमन किया गया है।

6. शोध विधियाँ

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। शैक्षिक अनुसंधान की दृष्टि से प्रस्तावित शोध कार्य मुख्य रूप से सर्वेक्षणात्मक (वर्णनात्मक) होगा। प्रस्तावित अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया जाएगा –

6.1 सर्वेक्षण विधि

शैक्षिक अनुसंधान में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। इस विधि के द्वारा गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनों ही प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। अपने इस अनुसंधान में भी शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

6.2 अवलोकन विधि

शोध अध्ययन के लक्ष्यों की प्राप्ति में शैक्षिक तकनीकी की वर्तमान स्थिति का पता लगाने हेतु न्यादर्श के रूप में चयनित माध्यमिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का अवलोकन किया गया है।

6.3 अभिलेख अध्ययन विधि

शैक्षिक अनुसंधानों में तथ्यपूर्ण उपलब्धि के लिए अभिलेख अध्ययन विधि एक महत्वपूर्ण एवं उपयोगी विधि है। अभिलेख अध्ययन से तात्पर्य, शोध समस्या से सम्बन्धित उन समस्त अभिलेखों, पुस्तकों, ज्ञान कोषों, समाचार, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों, प्रकाशित व अप्रकाशित शोध प्रबन्धों से है, जिनके अध्ययन से शोधार्थी को अपनी शोध समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा को तैयार करने एवं शोध कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

7. न्यादर्श चयन

शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा आगरा जिले के सभी 15 विकासखण्डों – फतेहपुर सीकरी, अछनेरा, अकोला, बिचपुरी, बरौली–अहीर, खंदौली, एत्मादपुर, जगनेर, खेरागढ़, सैंया, शमशाबाद, फतेहाबाद, पिनाहट, बाह, जैतपुर–कलां में से प्रत्येक विकासखण्ड से माध्यमिक शिक्षा स्तर के 10–10 विद्यालयों, कुल 150 विद्यालयों को विस्तृत शोध सर्वेक्षण हेतु न्यादर्श में चयनित किया गया है तथा न्यादर्श में चयनित प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्यों, कुल 150 प्राचार्यों, प्रत्येक विद्यालय में कार्यरत 4–4 शिक्षकों, कुल 600 शिक्षकों, प्रत्येक विद्यालय में अध्ययनरत 10–10 छात्र–छात्राओं कुल 1500 छात्र–छात्राओं (750 छात्र + 750 छात्राओं) एवं इसके अतिरिक्त प्रत्येक विकासखण्ड से शिक्षा विभाग से सम्बन्धित 4–4 अधिकारियों, कुल 60 अधिकारियों को भी शोध सर्वेक्षण हेतु न्यादर्श में चयनित किया गया है। शोधार्थी द्वारा सभी न्यादर्शों का चयन दैव–निदर्शन विधि से किया गया है।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक तकनीकी का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – कपिल, एच. के. (1966)[1], पाठक, पी. डी. (2007)[2], यादव, परमानंद सिंह एवं यादव लालधारी (2006)[3], शर्मा, पिंकी (2016)[4], शर्मा (2004)[5]

9. शोध क्षेत्र का परिचय

आगरा जिला पश्चिमी क्षेत्र के अन्तर्गत दक्षिण–पश्चिमी भूभगा में स्थित हैं यह उत्तर से दक्षिण में 27.14 डिग्री से 27.94 डिग्री उत्तरी अक्षांश तथा पश्चिम से पूर्व की ओर 77.20 डिग्री से 78.54 डिग्री पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। आगरा जिले की उत्तरी सीमा जनपद बुलन्दशहर एवं जनपद बदायूँ से मिलती है। पूर्वी सीमा जनपद फर्रूखाबाद एवं इटावा से मिलती है। दक्षिणी सीमा मध्य प्रदेश एवं राजस्थान से मिलती है।

प्रशासनिक दृष्टि से आगरा जिले की तहसील एवं विकासखण्ड इस प्रकार हैं – आगरा जिले में छः तहसीले हैं, आगरा, किरावली, खेरागढ़, फतेहाबाद, बाह, एत्मादपुर तथा आगरा जिले के 15 विकासखण्ड है, बरौली अहीर, बिचपुरी, अकोला, अछनेरा, फतेहपुर सीकरी, जगनेर, खेरागढ़, सैंया, फतेहाबाद शमशाबाद, बाह, पिनाहट जैतपुर कला, एत्मादपुर, खंदौली।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में तालिकाबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना कमांक –01

"आगरा जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक तकनीकी का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।"

तालिका 1: आगरा जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के प्रभाव का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श	न्यादर्श में चयनित संख्या	माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक तकनीकी का					
			सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।		कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।		कोई जानकारी नहीं	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	अधिकारी	60	50	83.33	02	3.33	08	13.33
2.	प्राचार्य	150	145	96.66	02	1.33	03	2.00
3.	शिक्षक	600	525	87.50	58	9.66	17	2.83
4.	छात्र	1500	1374	91.60	92	6.13	34	2.26
5.	अभिभावक	600	506	84.33	51	8.50	43	7.16
योग		2910	2600	89.35	205	7.04	105	3.61

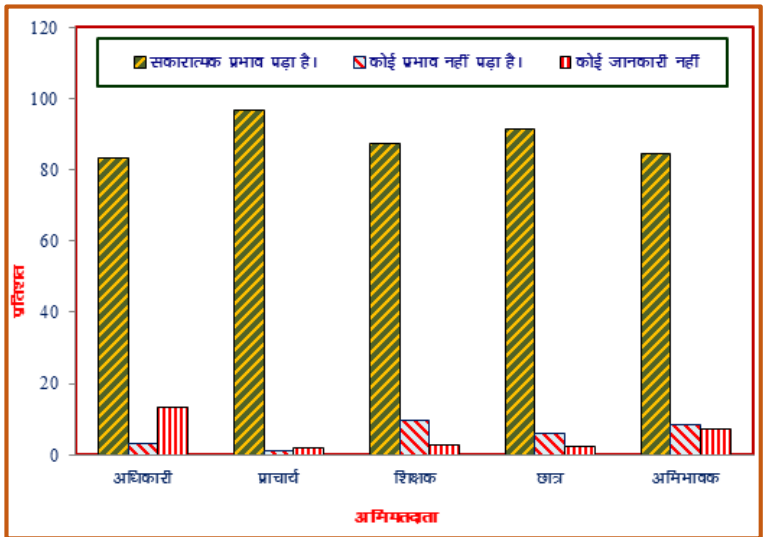

आकृति 1: आगरा जिले मे माध्यमिक शिक्षिक तकनीकी के प्रभाव का अध्ययन

तालिका क्रमांक 1 में संकलित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 83.33 प्रतिशत अधिकारी, 96.66 प्रतिशत प्राचार्य, 87.50 प्रतिशत शिक्षक, 91.60 प्रतिशत छात्र 84.33 प्रतिशत अभिभावकों का अभिमत है कि आगरा जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक तकनीकी का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

तालिका क्रमांक 1 में संकलित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 89.35 प्रतिशत इस बात से सहमत हैं कि आगरा जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक तकनीकी का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। 7. 04 प्रतिशत यह मानतें है कि आगरा जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक तकनीकी का सकारात्मक प्रभाव नही पड़ा है, जबकि 3. 61 प्रतिशत को आगरा जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक तकनीकी का सकारात्मक प्रभाव के सम्बंध में कोई जानकारी नही है।

अतः परिकल्पना क्र. 1 सत्यापित होती है।

परिकल्पना कमांक – 02

''माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षण को वैज्ञानिक, वस्तुनिष्ठ, स्पष्ट, सरल एवं रूचिकर बनाने में शैक्षिक तकनीकी का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। ''

तालिका 2: आगरा जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षण को वैज्ञानिक, वस्तुष्ठि, स्पष्ट, सरल एवं रूचिकर बनाने में शैक्षिक तकनीकी के प्रभाव का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श	न्यादर्श में चयनित संख्या	माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षण को वैज्ञानिक, वस्तुष्ठि, स्पष्ट, सरल एवं रूचिकर बनाने में शैक्षिक तकनीकी का					
			सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।		कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।		नही पता	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	अधिकारी	60	57	95.00	02	3.33	01	1.66
1.	प्राचार्य	150	145	96.66	03	2.00	02	1.33
2.	शिक्षक	600	444	74.00	136	22.66	20	3.33
3	छात्र	1500	1448	96.53	19	1.26	33	22
4.	अभिभावक	600	532	88.66	30	5.00	38	6.33
योग		2910	2626	90.24	190	6.53	94	3.23

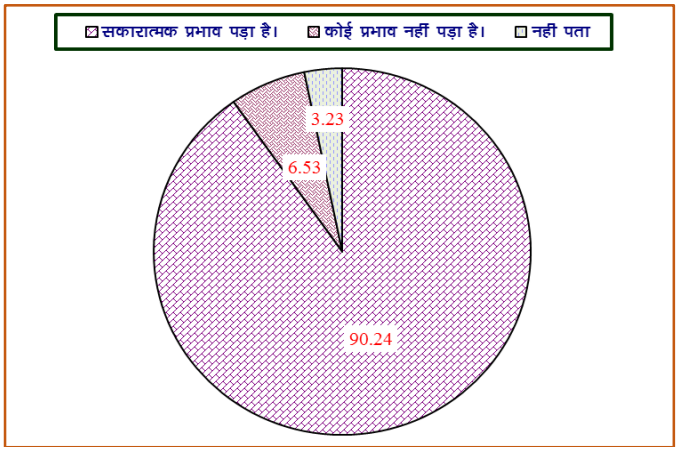

आकृति 2: आगरा जिले मे माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षण को वैज्ञानिक, वस्तुष्ठि, स्पष्ट, सरल एवं रूचिकर बनाने में शैक्षिक तकनीकी के प्रभाव का अध्ययन

तालिका कमांक 2 मे संकलित प्रदत्तों के अध्ययन से स्पष्ट है कि 95.00 प्रतिशत अधिकारी, 96.66 प्रतिशत प्राचार्य, 74.00 प्रतिशत शिक्षक, 96.53 प्रतिशत छात्र व 88.66 प्रतिशत अभिभावक यह मानते है कि माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षण को वैज्ञानिक, वस्तुनिष्ठ, स्पष्ट, सरल एवं रूचिकर बनाने में शैक्षिक तकनीकी का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

तालिका क्रमांक 2 मे संकलित प्रदत्तों के अध्ययन से स्पष्ट है कि 90.24 प्रतिशत अभिमतानुसार माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षण को वैज्ञानिक, वस्तुनिष्ठ, स्पष्ट, सरल एवं रूचिकर बनाने में शैक्षिक तकनीकी का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। 6.53 प्रतिशत यह मानते है कि माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षण को वैज्ञानिक, वस्तुनिष्ठ, स्पष्ट, सरल एवं रूचिकर बनाने में शैक्षिक तकनीकी का सकारात्मक प्रभाव नही पड़ा है, जबकि 3.23 प्रतिशत को माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षण को वैज्ञानिक, वस्तुनिष्ठ, स्पष्ट, सरल एवं रूचिकर बनाने में शैक्षिक तकनीकी का सकारात्मक प्रभाव के संबंध में पता नही है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

11. निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि –

- शोध क्षेत्र में 83.33 प्रतिशत अधिकारी, 96.66 प्रतिशत प्राचार्य, 87.50 प्रतिशत शिक्षक, 91.60 प्रतिशत छात्र 84.33 प्रतिशत अभिभावकों का अभिमत है कि आगरा जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक तकनीकी का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।
- शोध क्षेत्र में 95.00 प्रतिशत अधिकारी, 96.66 प्रतिशत प्राचार्य, 74.00 प्रतिशत शिक्षक, 96.53 प्रतिशत छात्र व 88.66 प्रतिशत अभिभावक यह मानते है कि माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षण को वैज्ञानिक, वस्तुनिष्ठ, स्पष्ट, सरल एवं रूचिकर बनाने में शैक्षिक तकनीकी का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

12. संदर्भ

1. कपिल, एच.के. – सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1966.
2. पाठक, पी.डी. – भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं, इक्कीसवां संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 2007.
3. यादव, परमानंद सिंह एवं यादव लालधारी – वर्तमान शैक्षिक समस्याओं के समाधान में प्राचीन भारतीय शैक्षिक परम्पराओं की प्रासंगिकता, भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन.सी.ई.आर.टी. 2006; वर्ष–24, अंक–3, पृ0 75–84.
4. शर्मा, पिंकी – शिक्षा का महत्व, दैनिक जागरण आगरा से मुद्रित एवं प्रकाशित, 9 मई 2016.
5. शर्मा, ओ.पी. – ग्रामीण क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी, प्रतियोगिता दर्पण अप्रैल 2004.